पाठ्य सामग्री

हिन्दी व्याकरण, वर्ग – XII

संधि – महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

– चन्देश्वर प्रसाद सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अल-हफीज़ कॉलेज
आरा

1. संधि से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

उत्तर – संधि का अर्थ है जोड़ या मेल। व्याकरण में यह दो शब्दों के पास-पास आने से होता है। इसमें पहले शब्द की अंतिम ध्वनि या वर्ण और दूसरे शब्द की पहली ध्वनि या वर्ण का मेल होता है।

परिभाषा – दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार या रूप-परिवर्तन को संधि कहते हैं। जैसे –

पर + उपकार – अ + उ = ओ – परोपकार
जगत् + नाथ – त् + न = न्न – जगन्नाथ
राम + अवतार – अ + अ = आ – रामावतार
अन्तः + अंग – : (विसर्ग) + अ = र – अन्तरंग

2. संधि के कितने भेद होते हैं? सोदाहरण लिखिए।

उत्तर – संधि के तीन भेद होते हैं –
(क) स्वर संधि – परम + ईश्वर = परमेश्वर – स्वर और स्वर
(ख) व्यंजन संधि – जगत् + ईश = जगदीश – व्यंजन और स्वर
(ग) विसर्ग संधि – मनः + रंजन = मनोरंजन – विसर्ग और स्वर या व्यंजन
दुः + आचार = दुराचार

3. स्वर संधि किसे कहते हैं? सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

उत्तर – दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार या रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। जैसे – अ + अ = आ = स्व + अधीन = स्वाधीन
आ + ई = ए = महा + ईश = महेश

4. स्वर संधि के भेद और उनके दो-दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर – (क) दीर्घ स्वर संधि – भोजनालय, गिरीश
(ख) गुण " " – देवेश, महर्षि
(ग) वृद्धि " " – सदैव, परमौषध
(घ) यण " " – अत्यावश्यक, अन्वय
(ङ) अयादि " " – पवन, पावक

5. सन्धि और संयोग में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर संधि में दो वर्ण मिलकर तीसरा रूप ग्रहण कर लेते हैं, जबकि संयोग में कोई नया रूप नहीं बनता। सिर्फ लिखने का तरीका बदल जाता है।
जैसे – तत् + रूप = तद्रूप (संधि)
तत् + पुरुष = तत्पुरुष (संयोग)

(6) निम्नलिखित संधियों का विच्छेद करते हुए उनका नाम बताइए।

सर्वाधिक — सर्व + अधिक = दीर्घ स्वर संधि
राकेश — राका + ईश = गुण स्वर संधि
महेश — महा + ईश = गुण " "
सूर्यास्त — सूर्य + अस्त = दीर्घ " "
स्वेच्छा — स्व + इच्छा = गुण " "
परोपकार — पर + उपकार = " " "
सदैव — सदा + एव = वृद्धि " "
सच्चरित्र — सत् + चरित्र = व्यंजन संधि
उज्ज्वल — उत् + ज्वल = व्यंजन संधि
प्रत्येक — प्रति + एक = यण स्वर संधि
तल्लीन — तत् + लीन = व्यंजन संधि
तद्धित — तत् + हित = " "
उद्घाटन — उत् + घाटन = " "
अब्ज — अप् + ज = " "
रामायण — राम + अयन = " "
सरोज — सर: + ज = विसर्ग संधि
नमस्ते — नम: + ते = " "
निस्संदेह — नि: + संदेह = " "
नीरस — नि: + रस = " "
अभिषेक — अभि + सेक = व्यंजन संधि
पावक — पौ + अक = अयादि स्वर संधि
गायक — गै + अक = " " "
देवर्षि — देव + ऋषि = गुण " "
श्रेयस्कर — श्रेय: + कर = विसर्ग संधि
उपर्युक्त — उपरि + उक्त = यण स्वर संधि
प्रत्यक्ष — प्रति + अक्ष = " " "
भूषण — भूष् + अन = व्यंजन "
गिरीश — गिरि + ईश = दीर्घ स्वर संधि
पयोवृद्ध — पय: + वृद्ध = विसर्ग संधि
साष्टांग — स + अष्ट + अंग = दीर्घ स्वर संधि
पयोधि — पय: + धि = विसर्ग संधि
निश्छल — नि: + छल = " "
स्वर्ग — स्व: + ग = " "
संसार — सम् + सार = व्यंजन संधि

7. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए।

अभि + इष्ट = अभीष्ट
मन: + योग = मनोयोग
दु: + कर्म = दुष्कर्म
वि + सम = विषम
परि + मान = परिमाण
सु + उक्ति = सूक्ति
गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
भारत + इंदु = भारतेंदु
मद + उन्मत्त = मदोन्मत्त
पितृ + अनुमति = पित्रनुमति
दंत + ओष्ठ = दंतोष्ठ
वधू + आगमन = वध्वागमन
सम् + चय = संचय
सम् + गति = संगति
आ + छादन = आच्छादन
नि: + पाप = निष्पाप
गिरि + ईश = गिरीश
सत् + धर्म = सद्धर्म
नि: + प्राण = निष्प्राण
यश: + धरा = यशोधरा
वाक् + मय = वाङ्मय
दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन
वि + उत्पत्ति = व्युत्पत्ति
सम् + कृत = संस्कृत
गो + ईश = गवीश
तत् + आकार = तदाकार
उत् + हत = उद्धत
वाक् + ईश = वागीश
मातृ + आनंद = मात्रानंद
नि: + आकार = निराकार